नईदुनिया

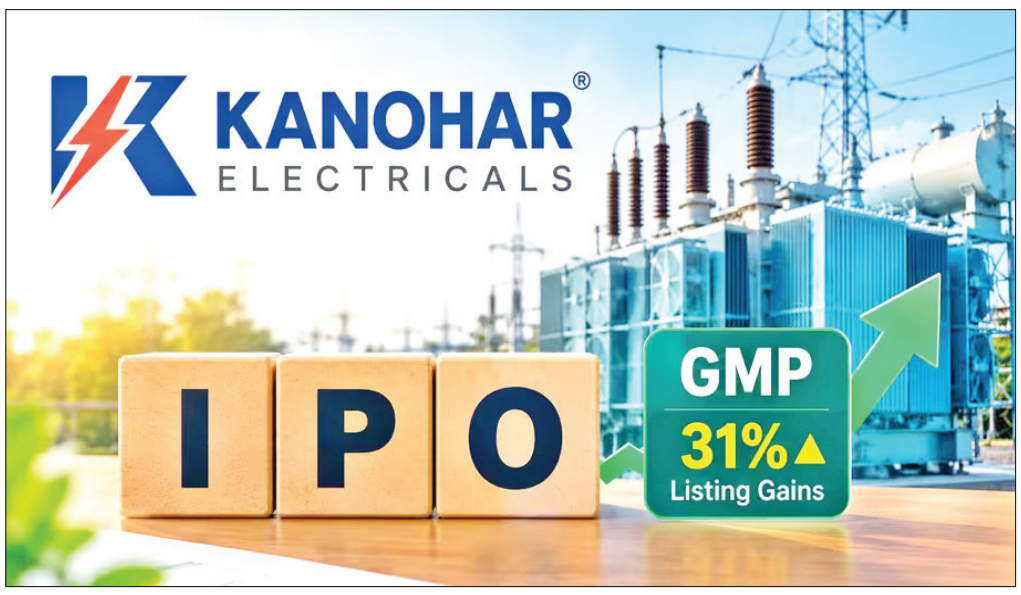

कनोहर इलेक्ट्रिकल्स का आईपीओ 2 रूपये के शेयर की 632 कीमत निवेश कितना सुरक्षित

मुंबई

कनोहर इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड का करीब 1,055.74 करोड़ रुपए का आईपीओ 8 सितंबर से 10 सितंबर तक खुला है। कंपनी ने 2 रुपए फेस वैल्यू वाले शेयर का प्राइस बैंड 601 से 632 रुपए तय किया है। यानी ऊपरी कीमत पर निवेशक फेस वैल्यू से 316 गुना कीमत चुकाना पड़ेगा। न्यूनतम 23 शेयरों की एक लाट के लिए निवेशक को न्यूनतम 14,536 रुपए निवेश करने होंगे।

सवाल यह है, क्या इतनी ऊंची कीमत निवेशकों के लिए सुरक्षित है फेस वैल्यू और इश्यू प्राइस मे इतना अंतर क्यों है। कंपनी सपने दिखाकर निवेशकों से ज्यादा पैसे निवेश करा रही है। आईपीओ का मूल्यांकन कंपनी की कमाई, संपत्ति, भविष्य की संभावनाओं और बाजार में समान कंपनियों के मूल्यांकन के आधार पर किये जाने का दावा किया जाता है। 632 रुपए की कीमत पर निवेशकों को जोखिमों की अनदेखी नहीं करनी चाहिए।

कंपनी के वित्तीय आंकड़े पहली नजर में मजबूत दिखाई देते हैं। वित्त वर्ष 2024 में 281.12 करोड़ रुपए का राजस्व और मात्र 17.76 करोड़ रुपए का मुनाफा था, जो वित्त वर्ष 2026 में बढ़कर करीब 662.86 करोड़ और मुनाफा 129.73 करोड़ रुपए हो गया। कंपनी पर कर्ज करीब 39 करोड़ रुपए है। इशू लाने के पहले और बैलेंस शीट में मुनाफा और कारोबार बढ़कर दिखाया जाता है। इस तरह की धारणा बनी हुई है।

कंपनी के शेयर का मूल्यांकन महंगा है। ऊपरी प्राइस बैंड पर पोस्ट-इश्यू पी/ई करीब 38.6 गुना बैठता है। कंपनी का वित्त वर्ष 2026 का ईपीएस करीब 17.43 रुपए और नेट एसेट मात्र 50.09 रुपए बताई गई है। यानी निवेशक बुक वैल्यू की तुलना में काफी ऊंची कीमत वसूल की जा रही है।

एक महत्वपूर्ण तथ्य यह है, वित्त वर्ष 2026 में कंपनी के राजस्व का करीब 85% हिस्सा सरकारी संस्थाओं से आया। सरकारी आर्डर, भुगतान में देरी का असर कंपनी के कारोबार पर पड़ सकता है। बड़े प्रोजेक्टों में लागत बढ़ने और मार्जिन घटने का जोखिम भी कंपनी के दस्तावेजों में बताया गया है। कंपनी स्वयं स्वीकार कर रही है कि उसके कारोबार में जोखिम भी बड़ा है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि 1,055.74 करोड़ रुपए के इश्यू में केवल 300 करोड़ रुपए कंपनी को नए शेयर जारी करके मिलेंगे।

न्यूज ब्रीफ

कच्चे तेल की कीमत 97 डालर पार, फिर भी पेट्रोल-डीजल के दाम स्थिर, 100.55 रुपये से लेकर 116.39 लीटर तक है पेट्रोल का भाव

नई दिल्ली। पश्चिम एशिया में गहराते भू-राजनीतिक तनाव के बीच अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतें लगातार बढ़ रही हैं, जो 97 डालर प्रति बैरल के पार पहुंच गई हैं और जल्द ही 100 डालर का आंकड़ा छूने की आशंका है। हालांकि, इस वैश्विक हलचल के बावजूद भारतीय उपभोक्ताओं को राहत मिली है। देश की तेल विपणन कंपनियों ने पेट्रोल और डीजल की दरों में कोई फेरबदल नहीं किया है, जिससे भी राजधानी दिल्ली सहित प्रमुख शहरों में ईंधन के दाम स्थिर बने हुए हैं। तेल विपणन कंपनियों ने सुबह 6 बजे जारी दरों में कोई फेरबदल नहीं किया है, जिससे देशभर में पेट्रोल और डीजल के भाव यथावत हैं। राजधानी दिल्ली में पेट्रोल 102.12 रुपए और डीजल 95.20 रुपए प्रति लीटर पर टिका हुआ है। पड़ोसी शहर नोएडा में पेट्रोल 102.12 रुपए और गुरुग्राम में 102.97 रुपए प्रति लीटर बिक रहा है। देशभर में सबसे सस्ता पेट्रोल देहरादून में 100.55 रुपए प्रति लीटर मिल रहा है, जबकि सबसे महंगा पेट्रोल विशाखापट्टनम में 116.39 रुपए प्रति लीटर पर स्थिर है। अन्य प्रमुख शहरों जैसे लखनऊ में पेट्रोल 101.89, जयपुर में 112.69 और भोपाल में 114.57 रुपए प्रति लीटर के भाव मिल रहा है। उच्च प्रदर्शन वाले प्रीमियम एक्सपी 95 और अल्ट्रा-प्रीमियम एक्सपी 100 जैसे ईंधनों की कीमतों में भी कोई बदलाव नहीं किया गया है, जिससे वाहन चालकों पर अतिरिक्त बोझ नहीं पड़ा है।

तकनीकी खराबी से आरबीआई की 7 लाख करोड़ की नीलामी प्रभावित, कई बैंक भाग नहीं ले पाए, केवल 2.59 लाख करोड़ की बोलियां मिलीं

नई दिल्ली। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) की 7 लाख करोड़ रुपये की अधिसूचित राशि के लिए आयोजित 30-दिवसीय वेरिएबल रेट रिवर्स रीपो (वीआरआरआर) नीलामी में उम्मीद से काफी कम मांग देखी गई। यह कमी आरबीआई के ई-कुबेर पोर्टल में आई एक तकनीकी खराबी के कारण हुई, जिसके चलते नीलामी को दूसरे प्लेटफार्म पर ले जाना पड़ा और कई बैंक इसमें भाग नहीं ले सके। बाजार सहभागियों ने बताया कि आरबीआई के कोर बैंकिंग साल्यूशन (सीबीएस) ई-कुबेर प्लेटफार्म में तकनीकी समस्या आ गई थी। इसके कारण बोली प्रक्रिया को दूसरे मंच पर स्थानांतरित करना पड़ा। कुछ बैंकों को इस बदलाव की जानकारी नहीं मिल पाई, जिससे वे नीलामी में भाग नहीं ले सके। आरबीआई ने 7 लाख करोड़ रुपये की अधिसूचित राशि के मुकाबले केवल 2.59 लाख करोड़ रुपये की बोलियां प्राप्त कीं। बाजार सहभागियों ने लगभग 5 लाख करोड़ रुपये तक की बोलियों की उम्मीद की थी, लेकिन वास्तविक प्रतिक्रिया अपेक्षाओं से काफी कम रही। एक वरिष्ठ बैंकर ने कहा, सिस्टम के स्तर पर खराबी थी। यह नीलामी बैंकिंग प्रणाली से अतिरिक्त नकदी को अवशोषित करने के लिए आयोजित की जाती है। आंकड़ों के अनुसार, बैंकिंग व्यवस्था में 11.16 लाख करोड़ रुपये का शुद्ध नकदी अधिशेष था, जो इस नीलामी की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

सरकारी बान्ड में एफपीआई को राहत, सेबी ने निवेशक समूह की जानकारी से छूट दी

मुंबई। भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) ने विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (एफपीआई) के लिए एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए सरकारी प्रतिभूतियों में निवेश करने वाले ऐसे निवेशकों को निवेशक समूह की विस्तृत जानकारी देने की अनिवार्यता से छूट दे दी है। इस कदम से भारत के बान्ड बाजार में विदेशी निवेश को बढ़ावा मिलने की उम्मीद है। पहले यह छूट केवल फुली एक्सेसिबल रूट (एफएआर) के तहत सरकारी बान्ड में निवेश करने वाले एफपीआई तक सीमित थी। लेकिन अब इसे उन सभी एफपीआई तक बढ़ा दिया गया है जो सिर्फ सरकारी ऋण में निवेश करते हैं, भले ही उनका निवेश तरीका कुछ भी हो।

सर्राफा बाजार में सोने के भाव में गिरावट जारी, चांदी की कीमत में बदलाव नहीं

नई दिल्ली

घरेलू सर्राफा बाजार में शुरुआती कारोबार के दौरान सोने के भाव में गिरावट का रुख बना हुआ नजर आ रहा है। वहीं चांदी के भाव में कोई बदलाव नहीं हुआ है। देश के ज्यादातर सर्राफा बाजार में सोना 600 रुपये प्रति 10 ग्राम से लेकर 650 रुपये प्रति 10 ग्राम तक सस्ता हो गया है। भाव में बदलाव होने के कारण सर्राफा बाजार में 24 कैरेट सोना 1,54,140 रुपये प्रति 10 ग्राम से लेकर 1,54,290 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है। इसी तरह 22 कैरेट सोना 1,41,290 रुपये प्रति 10 ग्राम से लेकर 1,41,440 रुपये प्रति 10 ग्राम के बीच बिक रहा है। चांदी के भाव में बदलाव नहीं होने के कारण ये चमकीली धातु दिल्ली सर्राफा बाजार में भी 2,49,900 रुपये प्रति किलोग्राम के स्तर पर बिक रही है।

दिल्ली में 24 कैरेट सोना 1,54,290 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है, जबकि 22 कैरेट सोने की कीमत 1,41,440 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है। वहीं देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में 24 कैरेट सोना 1,54,140 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 1,41,290 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। इसी तरह अहमदाबाद में 24 कैरेट सोने की रिटेल कीमत 1,54,190 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोने की कीमत 1,41,340 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है।

इन प्रमुख शहरों के अलावा चेन्नई में 24 कैरेट सोना 1,54,140 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर और 22 कैरेट सोना 1,41,290 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर बिक रहा है। इसी तरह कोलकाता में 24 कैरेट सोना 1,54,140 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 1,41,290 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है। भोपाल में 24 कैरेट सोने की कीमत 1,54,190 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर है, जबकि 22 कैरेट सोना 1,41,340 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। जयपुर में 24 कैरेट सोना 1,54,290 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 1,41,440 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। पटना में 24 कैरेट सोने की कीमत 1,54,190 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर है, जबकि 22 कैरेट सोना 1,41,340 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। लखनऊ के सर्राफा बाजार में 24 कैरेट सोना 1,54,290 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर और 22 कैरेट सोना 1,41,440 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। देश के अन्य राज्यों की तरह कर्नाटक, तेलंगाना और ओडिशा के सर्राफा बाजार में भी सोना गिरावट के साथ कारोबार करता हुआ नजर आया। इन तीनों राज्यों की राजधानियों बेंगलुरु, हैदराबाद और भुवनेश्वर में 24 कैरेट सोना 1,54,140 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है। इसी तरह इन तीनों शहरों के सर्राफा बाजारों में 22 कैरेट सोना 1,41,290 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है।

गिरवी रसीद, लोन एग्रीमेंट और गहनों की वैल्यूएशन रिपोर्ट संभाल कर रखें

नई दिल्ली

गोल्ड लोन लेते समय बैंक या कंपनी के पास गहने गिरवी रखने पड़ते हैं। ऐसे में अगर कर्ज चुकाने से पहले बैंक की कस्टडी में रखे गहने चोरी या गायब हो जाएं, तो यह सवाल उठता है कि नुकसान की भरपाई कौन करेगा और मुआवजा कैसे मिलेगा। अगर आपको पता चलता है कि आपका गिरवी रखा गोल्ड चोरी हो गया है, तो तुरंत बैंक को इसके बारे में जानकारी दें।

साथ ही बैंक से घटना की लिखित जानकारी और पुलिस में दर्ज शिकायत या एफआईआर की कापी मांगे। बैंक के साथ हुई बातचीत और सभी दस्तावेज को अपने पास सुरक्षित रखें। बातचीत के दौरान बैंक से लिखित तौर पर पूछें कि किस

बैंक या कंपनी के पास गिरवी रखे गहने चोरी हो जाएं तो कानून के मुताबिक होगी भरपाई

स्थिति में चोरी हुए और नुकसान की भरपाई के लिए क्या प्रोसेस अपनाई जा रही है।

गोल्ड जमा करते समय मिले गिरवी रसीद, गोल्ड लोन एग्रीमेंट और गहनों की वैल्यूएशन रिपोर्ट जैसी डाक्युमेंट को अपने पास संभाल कर रखें। इन दस्तावेजों के जरिए यह साबित किया जा सकता है कि बैंक के पास कौन-से गहने गिरवी रहे थे और उनका वजन और कीमत कितनी थी। इसके अलावा उन गहने का फोटो और खरीदारी की बिल को भी महफूज रखें। आमतौर पर चोरी होने मुआवजे की रकम और उस पर ब्याज का फैसला मामले की परिस्थितियों, बैंक की जिम्मेदारी, अनुबंध, बीमा और लागू कानून के मुताबिक तय की जाती है। ऐसे में फिलहाल यह कहना सही नहीं है कि हर मामले में सोना की पूरी कीमत या ब्याज अपने आपको मिल जाएगा।

पेट्रोलियम कंपनियों ने सरकार से मांगे 75 हजार करोड सरकार का फैसला 2027 में

नई दिल्ली । देश की तीन बड़ी सरकारी पेट्रोलियम कंपनियां इंडियन आयल, भारत पेट्रोलियम, और हिंदुस्तान पेट्रोलियम ने ईंधन बिक्री में हुए नुकसान की भरपाई के लिए केंद्र सरकार से 75 हजार करोड़ रुपये के मुआवजे की मांग की है। सरकार ने फिलहाल फैसला टालते हुए नुकसान का आकलन कर 2027 में मुआवजे पर निर्णय लेने की बात कही है। दिलचस्प यह है, इन कंपनियों के पिछले दो वर्षों के मुनाफे के आंकड़े हजारों करोड़ रुपये के हैं। वित्त वर्ष 2023-24 में आईओसी का शुद्ध लाभ करीब 39,619 करोड़, बीपीसीएल का 26,673 करोड़ और एचपीसीएल का 14,694 करोड़ रुपये का मुनाफा था। यानी तीनों कंपनियों का संयुक्त लाभ करीब 81 हजार करोड़ रुपये रहा। वित्त वर्ष 2024-25 में मुनाफा घटा, लेकिन कंपनियां फिर भी लाभ में रहीं। आइओसी ने 12,962 बीपीसीएल ने करीब 13,337 और एचपीसीएल ने 7,365 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ कमाया है। कंपनियों का लाभ जरूर काम हुआ है लेकिन घाटे जैसी कोई बात नहीं है। ऐसे में 75 हजार करोड़ के मुआवजे की मांग ने कई सवाल खड़े किए हैं। क्या उपभोक्ताओं को नियंत्रित कीमतों पर ईंधन उपलब्ध कराने के स्थान पर पेट्रोलियम कंपनियां उपभोक्ताओं से भारी मुनाफा वसूली करना चाहती हैं।

भारत ने बदली एलपीजी रणनीति, अब अमेरिका बना सबसे बड़ा सप्लायर

खाड़ी देशों से आयात 40 फीसदी घटा, अमेरिका की हिस्सेदारी बढ़कर 50 फीसदी पहुंची

नई दिल्ली

मध्य पूर्व में अमेरिका और ईरान के बीच छिड़े युद्ध ने भारत के सामने एलपीजी आपूर्ति का एक बड़ा संकट खड़ा कर दिया था। लेकिन, भारत ने इस चुनौती को अवसर में बदलते हुए अपनी ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित की है। कतर जैसे पारंपरिक आपूर्तिकर्ताओं पर हमले के बाद, भारत ने अपनी एलपीजी आयात रणनीति में आमूलचूल परिवर्तन किया है और अब संयुक्त राज्य अमेरिका उसका सबसे बड़ा एलपीजी आपूर्तिकर्ता बन गया है, जो पहले 10 फीसदी से भी कम था। बीते छह महीनों के आंकड़े बताते हैं कि जहां पहले भारत अपनी जरूरत का अधिकांश एलपीजी खाड़ी देशों जैसे यूएई, कतर, सऊदी अरब और कुवैत से मंगाता था, वहीं अब अमेरिका की हिस्सेदारी बढ़कर 50 फीसदी तक पहुंच गई है।

मार्च में ईरान, अमेरिका और इजराइल के बीच युद्ध शुरू होने के बाद खाड़ी देशों से भारत का एलपीजी आयात 40 फीसदी तक कम हो गया था, जिससे देश में एलपीजी का संकट गहराने लगा था। इसी संकट के माहौल में सरकार ने तत्काल कदम उठाते हुए अपनी आपूर्ति श्रृंखला को अमेरिका की ओर मोड़ दिया। गौरतलब है कि युद्ध से पहले, होर्मुज जलडमरूमध्य भारत की ऊर्जा आपूर्ति का लाइफलाइन था, जिससे हमारी जरूरत का 40 फीसदी कच्चा तेल, 60 फीसदी एलएनजी और 90 फीसदी एलपीजी का आयात होता था। यह मार्ग भारत की कुल 54 फीसदी ऊर्जा जरूरतों को पूरा करता था।

युद्ध के कारण इस मार्ग पर बढ़ते तनाव ने भारत को विकल्प तलाशने पर मजबूर किया। अबू धाबी की एक एनर्जी एनालिस्ट के अनुसार, युद्ध शुरू होने से पहले भी अमेरिका दुनिया का सबसे बड़ा एलपीजी सप्लायर था, और इस संकट ने एशियाई देशों में उसकी धाक बढ़ा दी है। हालांकि, इस रणनीतिक बदलाव के चलते भारत को फिलहाल एलपीजी के लिए अधिक कीमत चुकानी पड़ रही है, जबकि अमेरिकी गैस आमतौर पर सस्ती मानी जाती है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने उम्मीद जताई है कि युद्ध समाप्त होने के बाद गैस के दाम 2 डालर तक गिर सकते हैं। इस नए जुगाड़ से भारत की एलपीजी आपूर्ति अब मध्य पूर्व के भू-राजनीतिक उथल-पुथल से अपेक्षाकृत अप्रभावित रहेगी।

ग्लोबल मार्केट से मिले-जुले संकेत, एशिया में भी मिला-जुला कारोबार

नई दिल्ली

ग्लोबल मार्केट से मिले-जुले संकेत मिल रहे हैं। वाल स्ट्रीट में छुट्टी होने की वजह से अमेरिकी बाजार में पिछले सत्र के दौरान कोई कारोबार नहीं हुआ। हालांकि डाउ जान्स फ्यूचर्स 328.44 अंक यानी 0.61 प्रतिशत गिरावट के साथ 53,085.81 अंक के स्तर पर कारोबार करता हुआ नजर आ रहा है। यूरोपीय बाजार में पिछले सत्र के दौरान मिला-जुला कारोबार होता रहा। इसी तरह एशियाई बाजार में भी मिला-जुला कारोबार होता हुआ नजर आ रहा है।

यूरोपीय बाजार पिछले सत्र के दौरान मिले-जुले परिणाम के साथ बंद हुए। एफटीएसई इंडेक्स 0.13 प्रतिशत टूट कर 10,817.46 अंक के स्तर पर बंद हुआ। इसी तरह डीएएक्स इंडेक्स ने 0.23 प्रतिशत की कमजोरी के साथ 25,987.40 अंक के स्तर पर पिछले सत्र के कारोबार का अंत किया। दूसरी ओर, सीएसी इंडेक्स 0.24 प्रतिशत की मजबूती के साथ 8,299 अंक के स्तर पर बंद हुआ।

एशियाई बाजार में भी मिला-जुला कारोबार हो रहा है। एशिया के नौ बाजार में से पांच के सूचकांक मजबूती के साथ हरे निशान में कारोबार कर रहे हैं, जबकि चार सूचकांक गिरावट के साथ लाल निशान में बने हुए हैं। गिफ्ट निफ्टी 0.18 प्रतिशत की कमजोरी के साथ 23,784.50 अंक के स्तर पर कारोबार कर रहा है। इसी तरह सेट कंपोजिट इंडेक्स 0.16 प्रतिशत लुढ़क कर 1,616.18 अंक के स्तर पर आ गया है। इसके अलावा हैंग सेंग इंडेक्स 103.12 अंक यानी 0.41 प्रतिशत फिसल कर 25,310 अंक के स्तर पर और स्ट्रेट्स टाइम्स इंडेक्स 0.57 प्रतिशत की गिरावट के साथ 5,759.22 अंक के स्तर पर कारोबार कर रहे हैं।

दूसरी ओर, निक्केई इंडेक्स 223.16 अंकित 0.34 प्रतिशत की मजबूती के साथ 66,623 अंक के स्तर पर आ गया है। इसी तरह शंघाई कंपोजिट इंडेक्स 0.36 प्रतिशत उछल कर 3,946.99 अंक के स्तर पर पहुंचा हुआ है। कोस्पी इंडेक्स ने जोरदार छलांग लगाई है। फिलहाल यह सूचकांक 165.84 अंक यानी 2.37 प्रतिशत की बढ़त के साथ 7,161.23 अंक के स्तर पर कारोबार कर रहा है। इसी तरह जकार्ता कंपोजिट इंडेक्स 0.82 प्रतिशत की उछाल के साथ 6,673.63 अंक के स्तर पर पहुंचा हुआ है। इसके अलावा ताईवान वेटेड इंडेक्स 95.02 अंक यानी 0.20 प्रतिशत की मजबूती के साथ 47,421.29 अंक के स्तर पर कारोबार करता हुआ नजर आ रहा है।